2023

International Research Journal of Management Sociology & Humanities

Vol 14 Issue 8

ISSN 2348 – 9359

IRJMSH

www.IRJMSH.COM

Namdev

International Research Journal of Management Sociology & Humanities

ISSN 2348 – 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa

International Research Journal of Management Sociology & Humanities

Vol 14 ISSUE 8 AUG 2023

Khayal singing and Gharanas in Hindustani music.....3

Dr. Kasturi Paigude..... 3

IMPACT OF AWARENESS CAMPAIGNS TOWARDS CORRUPTION PRACTICES 11

Badrul Alom Choudhury.....11

सीमांत काव्य सन्दर्भ में विक्षोभ रस 17

शिव कुमार नेपाल.....17

The Contribution of Famous Baul Singers in Folk Tradition 31

Dr. Renu Gupta.....31

Russia's Nuclear Energy Strategy in the 21st Century 40

Dr.Anamika.....40

Role of Husbands in Empowering Spouses: A Study of Self Help Groups in Three Blocks of Ranchi District.....50

Rajshree Das.....50

Dr. Prabhat Kumar Singh.....51

भारतीय सामुद्रिक सुरक्षा के परिप्रेक्ष्य मे पायरेसी : एक चुनौती 64

अनिल कुमार विश्वकर्मा[1] 64

हर्ष कुमार सिन्हा[2] 64

फिरोजाबाद जनपद उ.प्र. में साक्षरता प्रतिरूप : एक भौगोलिक विश्लेषण अध्ययन.....70

बिधुनहरी.....70

अलीगढ़ जनपद उ.प्र. में पेयजल और प्रदूषण समस्या :– एक भौगोलिक विश्लेषण.....82

अध्ययन 82

रजत कुमार, (शोधार्थी).....82

वर्तमान समय में तुलनात्मक अध्ययन व्यासी एवं उपयोगिता 95

डॉ .नामदेव ज्ञानदेव शितोळे 95

जगदीश (शोधार्थी).....103

RIMSH Vol 14 Issue 8 [Year 2023] ISSN 2277 – 9809 (Online) 2348–9359 (Print)

वर्तमान समय में तुलनात्मक अध्ययन व्याप्ती एवं उपयोगिता

डॉ .नामदेव ज्ञानदेव शितोळे

हिंदी विभाग प्रमुख

सावित्रीबाई कला महाविद्यालय, पिंपळगाव पिसा,

तहसील -श्रीगोंदा, जिला- अहमदनगर, महाराष्ट्र

ई मेल **ndshitole76@gmail.com**

प्रस्तावना

तुलनात्मक अनुसंधान में मानव के भावों, विचारों और सामाजिक चेतना का दर्शन होता है। इसमें भाषा और साहित्य का गहन संबंध स्थापित करके उसका क्षितिज विस्तृत किया जाता है। जो विशेषताएँ सामान्य अध्ययन उजागर होने की संभावनाएँ नहीं होती ऐसी विशेषताओं कों तुलनात्मक अध्ययन द्वारा उजागर किया जा सकता है।

भारत एक बहुभाषी देश होने के कारण अनेक भाषाएँ हमारे देश में आज भी है। जिस प्रकार अनेक वर्षों के आपसी संपर्क और सामाजिक द्विभाषिता के कारण भारतीय भाषाएँ अपनी रूप-रचना से भिन्न होते हुए भी अपनी आर्थिक संरचना समरूप है, इसी प्रकार यह भी कहा जा सकता है कि अपनी जातीय इतिहास, सामाजिक चेतना, सांस्कृतिक मूल्य एवं
साहित्यिक संवेदना के संदर्भ में भारतीय साहित्य एक है।

पाश्चात्य विद्वानों द्वारा की गई तुलनात्मक साहित्य की परिभाषाएँ:

"तुलनात्मक साहित्य- साहित्य के समग्र रूप का अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करता है। जिसके मूल में यह भावना नीहित रहती है कि साहित्यिक सृजन और आस्वाद की चेतना जातीय एवं राजनैतिक, भौगोलिक सीमाओं से मुक्त एकरस और अंखड होती है।"[१] -रेन
वेलेक

"तुलनात्मक सहित्य में विभिन्न भाषाओं में लिखित साहित्य अथवा इसके सक्षिप्त घटकों

की साहित्यिक तुलना होती है। यही उसका आधार तत्व है।''[२] -क्लाई स्काट

''तुलनात्मक साहित्य एक राष्ट्र के साहित्य की परिधि के परे दूसरे राष्ट्र के साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन है। यह अध्ययन कला, इतिहास, समाज, विज्ञान, धर्मशास्त्र आदि ज्ञान के

विभिन्न क्षेत्रों के आपसी संबंधो का भी अध्ययन है।''[३] -हेनरी एच.एच. रेमाक

भारतीय विद्वानों द्वारा की गई तुलनात्मक साहित्य की परिभाषाएँ

''तुलनात्मक साहित्य जैसे कि उसके नाम से ही स्पष्ट है, साहित्य का तुलनात्मक दृष्टि से अध्ययन प्रस्तुत करते है। यह नाम पद वास्तव में एक प्रकार की न्यूनपदीय प्रयोग है और साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन का वाचक है।''[४] -डॉ. नगेंद्र

''एक या उससे अधिक भाषाओं में रचित साहित्य (इसमें साहित्यशास्त्र एवं समीक्षा भी

सम्मिलित है) वैषम्य, साम्य, प्रभाव इसका शोध करते समय होनेवाली समीक्षा को तुलनात्मक अध्ययन कहा जाता है।''[५] -वसंत बापट

इस प्रकार पाश्चात्य एवं भारतीय विद्वानोंने जो परिभाषाएँ दी है, इसके आधार पर हम कह सकते है कि तुलनात्मक साहित्य अध्ययन का एक स्वतंत्र विषय है। विभिन्न सहित्यिक

भाषाओं का रचित साहित्य एक संपूर्ण इकाई के रूप में व्यापक पहचान देने का प्रयास करता है।

यह केवल राष्ट्रीय एवं भाषिक साहित्य का अध्ययन नहीं है। इसमें मानवीय ज्ञान एवं कलात्मकता विस्तृत तुलनात्मक अध्ययन होता है। साहित्यिक कृतियों में निहित विशिष्टताओं को प्रकाश में लाने साथ इसमें दो या दो से अधिक कृतियों के साम्य और वैषम्य की निष्पक्ष जाँच अर्थात तुलना की जाती है।

तुलनात्मक अध्ययन की उपयोगिता

तुलनात्मक अध्ययन यह शोध की एक उदयोन्मुख शाखा है जो आज के समय की माँग है। मात्र साहित्य में साम्य-वैषम्य प्रकट करना ही तुलना नहीं है। इसके द्वारा साहित्य को विशेष पृष्ठभूमि प्रदान होती है। साथ ही प्रादेशिक अस्मिता को पहचान देने का काम तुलनात्मक अध्ययन द्वारा होता है। राष्ट्रीय एकात्मता और एकता को भी बढ़ावा मिलता है। इसके द्वारा दो संस्कृतियों एवं मूल्यों का आदान-प्रदान होता है। भिन्न भाषा-भाषी एक दूसरे के सांस्कृतिक, सामाजिक, ऐतिहासिक एवं धार्मिक मूल्यों से परिचित हो जाते है। भारत जैसे बहुभाषी और बहु सांस्कृतिक देश के लिए तुलनात्मक अध्ययन का महत्व और भी बढ़ जाता है। "वस्तुतः सर्वोत्कृष्ट साहित्य अर्थात गौरव-ग्रंथो मे देश काल से परे तुलनात्मक अध्ययन द्वारा कुछ ऐसी

विशिष्टताएँ संबंध-सुत्र प्रकट होते है, जिन पर हमारा ध्यान ही नहीं जाता। इन गौरव ग्रंथों पर पढ़नेवाले देशज प्रभाव उपलब्धियों का समालोचन उस कृति का उस पर प्रभाव- प्रतिक्रिया व्यक्तिगत दृष्टिकोन आदि का अध्ययन वैज्ञानिक प्रक्रिया द्वारा किया जाता है।"[६]

तुलनात्मक अध्ययन से वैज्ञानिक शोध-प्रक्रिया को बढ़ावा मिलता है उसकी उपयोगिता

निम्न बिंदुओं में दिखाई देती है।

- एक ही देश में होनेवाली विविध विधाओं को एक-दूसरे के निकट लाने के उपयोगी होता है।
- पूर्वग्रहों से मुक्ति पाने के लिए।
- जो विशेषताएँ सामान्य अध्ययन उजागर नहीं होती वहाँ तुलनात्मक अध्ययन उपयोगी सिद्धु होता है।
- इससे नवीन संदर्भ ...

- दो अलग-अलग भाषाएँ और उनके साहित्य का गहन संबंध प्रस्थापित होने में सहायता होती है।

- पारस्पारिक आदान-प्रदान द्वारा भाषाओं और साहित्य के क्षितिज विस्तृत होते है।

आज वैश्वीक स्तर पर तुलनात्मक अध्ययन बढ़ी मात्रा में शुरू हुआ है- "सभी साहित्य

याने मनुष्य के समान ऐसे आशा-निराशा के सुख दुःख के मन भावनात्मक क्रिया-प्रतिक्रिया के कलात्मक दर्शन है। इस दृष्टि से वे एकरूप है।"[७]

सामाजिक शास्त्र के बीच तुलनात्मक अध्ययन का अलग स्थान है। विभिन्न देश का

मानव समाज अपने राष्ट्र सीमा तक सीमित नहीं रहना चाहता। मानव समाज का प्रभाव एक- दुसरे पर हमेशा पडता है। इस दृष्टि से विजय पाल सिंह जी ने कहा है कि, "मैं हिंदी के पदवीत्तर पाठय्क्रम को अधिक संपन्न बनाने की आवश्यकता अनुभव करता हूँ। इस दिशा में अनुभव करता हूँ कि हमारे एम.ए. के पाठय्क्रम में अंतर्प्रांतिय साहित्यों के तुलनात्मक अध्ययन को स्थान मिलना चाहिए। ऐसा होने से स्नातकोत्तर कक्षाओं के छात्रों की दृष्टि उन्मुक्त होगी और आगे चलकर उन्हें शोध के लिए भी विषयों का अभाव नहीं रहेगा।"[८] अतः तुलनात्मक अध्ययन से हम इस निष्कर्ष पर पहूँचते है कि केवल हमारी ही भाषा का साहित्य श्रेष्ठ है ऐसी बात नहीं है तो विश्व अन्य भाषाओं के साहित्य के बीच भी एक वैचारिक भावनात्मक सरिता प्रवाहित रहती है। यह तुलनात्मक साहित्य अध्ययन की महत्वपूर्ण उपयोगिता है।

मनुष्य जाति की यह जन्मजात प्रवृत्ती रही है कि वह कहीं भी दो वस्तुओं की तुलना करता रहता है, चाहे वह दृश्य हो या अदुश्य हो या काल्पनिक भी क्यु न हो। शोध सत्यान्वेषण का प्रमुख साधन है जिसमें तुलना की जाती है। तुलना करने से ज्ञानार्जन और ज्ञानबोध हो जाता है। तुलना करने से व्यक्ति अपने आपको अनभिज्ञ विषयों का भी ज्ञान प्राप्त कर लेता है। मनुष्य तुलना के माध्यम से अनेक अनसुने अनदेखे, अनकहे, अछूते विषयों को समझकर उसका ज्ञान प्राप्त कर लेता है। जिस

एक मूलता प्रस्तापित करने का प्रयास किया जाता है। "तुलनात्मक अध्ययन द्वारा अनेक प्रकार की विघटनशील प्रवृत्तियों को दूर कर हमारी मूलभूत एकता की पुनःस्थापना का प्रयास किया जाता है।"[९]

विश्व के विभिन्न जगहों पर रहनेवालें भिन्न भाषा-भाषी साहित्यकारों की सोच अलग-अलग होती है। विभिन्न प्रातों की भाषाओं मे विद्यमान संस्कृति, उनकी राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक सोच अलग होती है। उनकी शब्द संपदा अलग होती है। वैश्वीकरण के दौर मे आज सारा विश्व सिमटकर एक गॉव बन गया है। सीमाओं के बंधन टूट गऐ है। विश्वमानवता और 'वसुधैवकुटुंबकम्' का नारा बुलंद हो गया है। मानव एक दूसरे के करीब आने लगा है। इससे ही तुलनात्मक साहित्य की उपयोगिता दिन ब दिन बढ़ती जा रही है। "तुलनात्मक अध्ययन में साहित्य अपनी प्रादेशिक तथा राष्ट्रीय सीमाओं को पार कर दूसरे राष्ट्र की भाषा, साहित्य, समाज, धार्मिक चेतना, राजनीति एवं सामाजिक परिवेश आदि का तुलनात्मक शोध करता है। इस शोध में अनेकता में एकता के सूत्र द्वारा मानव एकता का सूत्र सामने आता है।"[१०]

भारतीय भूमि पर अनेक संस्कृतियों का संमिलन हुआ है। साथ ही भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है लेकिन फिर भी विभिन्न भाषाओं में प्राप्त तथ्य एवं सत्य लगभग एक से पाए जाते है।

अतः भारतीय परिवार की भाषाओं का और उनके साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन करते समय भारत की विराट संस्कृति की ओर ध्यान देना आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है। "भारत की अनेकरूपी विराट एवं विभिन्न संस्कृति की मूलभूत एकता का अन्वेषण कर उसे पुनःस्थापित करने का कार्य शोध के द्वारा प्राप्त गरिमा, स्थिरता एवं गंभीरता से किया जा सकता है।"[११]

भारत में प्रादेशिक भिन्नता होने के कारण प्रत्येक प्रदेश का अपना इतिहास है।

विभिन्न भाषाओं के साहित्य में अभिव्यक्त समाज-जीवन उनका रहन-सहन, खान-पान, रीती- रिवाज, परंपरा आदि के साथ अलग-अलग भाषी लोग परिचित होते है। एक भाषा का साहित्य जब दूसरी भाषा के साहित्य के संपर्क में आता है। स्थानीय

प्रदेशों का रंग और प्रभाव उस पर किस प्रकार पडता है। इसका भी शोध तुलनात्मक अध्ययन द्वारा भली-भाँति समझ जाता है।

अलग-अलग प्रातों के गरिमामय इतिहास का आदान-प्रदान होता है।

राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय विचारों को आदान-प्रदान तुलनात्मक अध्ययन द्वारा होता है।

इसमें शोधकर्ता साहित्यिक कृतियों में निहित साम्य और वैषम्य का अध्ययन करके विश्व की विभिन्न भाषाओं के वैविध्य तथा एकता के तत्वों से दोनों भाषाओं का साहित्य समृध्द करता है। तुलनात्मक साहित्य के शोध से एक विशिष्ट भाषा के साहित्य की व्यक्तिविशेषता हमें ज्ञात होती है, साथ ही उसके प्रभाव तथा अन्य भाषाओं के साहित्य का उस भाषा के साहित्य के साथ
विद्यमान संबंध भी ज्ञात हो जाता है। साहित्य के साथ ही और अन्य ललित कलाओं का भी अनुबंध ज्ञात होता है। तुलनात्मक अध्ययन का उद्येश्य यहाँ तक ही सीमित नहीं रहता तो इसके अध्ययन से साहित्य के समाज पर पडे प्रभाव को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। समाज पर पडा प्रभाव ही तुलनात्मक अध्ययन की उपयोगिता सिध्द करता है।

निष्कर्ष

तुलना करना मनुष्य की जन्मजात प्रवृत्ती है। तुलनात्मक अध्ययन यह शोध के क्षेत्र में युरोप से होकर भारत में आयी है। जिसमें एक भाषा अथवा भिन्न भाषाओं के साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है। तुलनात्मक अध्ययन में विषमता बतलाने के लिए साम्य की खोज और साम्य बतलाने के लिए विषमता की खोज की जाती है। साम्य, वैषम्य और तुलना इन तीन महत्वपूर्ण बिंदू से गुजर कर तुलनात्मक शोध किया जाता है। कोई भी निष्कर्ष निकलने के लिए साम्य और वैषम्य का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है। जिससे सत्य सामने आने की संभावना होती है।

एक ही कालों की अथवा विभिन्न कालों की, भाषा की, साहित्यिक विधाओं की तुलना

अनुसंधानकर्ता करता है। इसमें तुलना किसकी, किसके साथ और किस आधार पर की जा रही है

यह महत्वपूर्ण होता है। जिन कृतियों की तुलना की जा रही है, उनके विषय का बहिरंग पक्ष और आंतरिक पक्ष देखना आवश्यक होता है। तुलना मुलता आंतरिक, ऐतिहासिक एवं सहज गुणों पर आधारित होनी चाहिए। इसमें भाषात्मक, देशकालपरक, आकृतिमूलक एवं आर्जित संस्कार, वंश पर नहीं अपितु तुलना के साथ-साथ मनुष्य के व्यक्तित्व में निहित अविभाज्य गुण भी तुलना का आधार बन सकते है।

तुलनात्मक शोध में किसी एक को क्षेष्ठ और दूसरे कनिष्ठ साबित करना यह अनुसंधान कर्ता का कार्य नहीं होता बल्कि वह उन्हीं तथ्यों को प्रतिपादित करता है जो दोनों भाषा अथवा साहित्यिक कृतियों में विद्यमान होता है। तुलनात्मक शोध भाषावैज्ञानिक, काव्यशास्त्रीय, समाजशास्त्रीय, शैलीवैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक, लोकतात्विक, समस्यामूलक आदि किसी भी दिशा

में किया जा सकता है। तुल्य विषय, रचनाकार, कृतिया साहित्य शोध का विषय बन सकता है।

विभिन्न भारतीय भाषाओं मे लिखित साहित्य के साथ हिंदी साहित्य की तुलना की जा सकती है।

हिंदी साहित्य में तुलनात्मक शोध का क्षेत्र अंत्यत व्यापक है। हिंदी की अनेक उपभाषाएँ और बोलियों की परस्पर तुलना आवश्यक है क्योंकि इसमें संचित ज्ञान की राशी लोगों के सामने आनी चाहिए।

केवल भाषाओं में रचित साहित्यों की तुलना नहीं वरन् मानवीय संबंधो तथा प्रतितियों विशेष रूप में कलात्मक तथा वैचारिक क्षेत्रों की भी आपस में तुलना संभव हो सकता है।

सादृश्य मूलक संबंध, परंपरा, विवेचन तथा प्रभाव-सूत्रों की खोज के लिए तुलनात्मक अध्ययन या अनुसंधान किया जाता है। तुलना के बिना अनुसंधान पुरा नहीं हो सकता। इस तुलनात्मक

अनुसंधान द्वारा ही

हर समय नवीन संदर्भ के साथ भाषा एवं साहित्य का संदर्भ नवीन एवं गहन हो जाता है। इसी कारण भाषा और साहित्य के क्षेत्रों में विस्तार संभव होता है। लेकिन तुलनात्मक अध्ययन पुर्वग्रहों से मुक्त होना चाहिए तभी वह विभिन्न देशों की, भाषाओं की, साहित्यों के निकट आ सकता है। दो अलग- अलग भाषाओं के साहित्य के बीच एक वैचारिक, भावात्मक साम्य-वैषम्य की सरिता प्रवाहित करके तुलनात्मक अध्ययन अपनी महत्वपूर्ण भूमिका सिध्द करता है।

संदर्भ

१) डॉ. रविद्रकुमार जैन, साहित्यिक अनुसंधान के आयाम, पृ.३५

२) डॉ. भ.ह. राजुरकर/डॉ. राजमल बोरा, तुलनात्मक अध्ययन स्वरूप एवं समस्याएँ पृ.३४

३) वही- पृ.३५

४) संपादक डॉ. नगेंद्र, तुलनात्मक साहित्य, पृ.७

५) वसंत बापट, तौलनिक साहित्याभ्यास, पृ.२४

६) डॉ. भ.ह. राजुरकर/डॉ. राजमल बोरा, तुलनात्मक अध्ययन स्वरूप एवं समस्याएँ पृ.४०

७) वसंत बापट, तौलनिक साहित्याभ्यास, पृ.१४

८) डॉ. विजयपाल सिंह, हिंदी अनुसंधान, पृ.२६५

९) डॉ. भ.ह. राजूरकर/राजमल बोरा, तुलनात्मक शोधः भारतीय भाषाएँ और साहित्य और समस्याएँ, पृ.१३४

१०) दत्तात्रय माहिते, साहित्य का तुलनात्मक शोधः राष्ट्रवाणी, अंक ४, पृ.५४

PRINCIPAL
Savitribai College of Arts
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar